© INNOVATIVE RESEARCH THOUGHTS
Refereed | Peer Reviewed | Indexed
ISSN : 2454 – 308X | Volume : 08 , Issue : 03 | July - September 2022

शिक्षा व ज्ञान से सामाजिक परिवर्तन सम्भव है – एक समीक्षा

डॉ. रमेश चन्दर (सहायक प्राद्यापक हिन्दी –शिक्षण)

कस्तूरी राम कॉलेज ऑफ हायर एजुकेशन नरेला नई दिल्ली

प्रस्तावना

मानवीय इतिहास मानव जीवन के हजारों वर्षो की कहानी है। मानव एक सामाजिक प्राणी है। वह समाज के बिना जिन्दा नहीं रह सकता। उसे समाज में रहकर जीवन यापन करना पड़ता है। वह सदैव समाज पर आश्रित रहता है। मानवीय समाज में समय के साथ परिवर्तन आया। मानव ने सामाजिक जीवन में प्रगति की। वह गुफाओं और कन्दराओं से निकल कर गाँव में रहने लगा, उसने जंगली जानवरों को मार कर खाना छोड़ दिया तथा उसने कन्द–मूल, फल पर भी निर्वाह करना छोड दिया। अब वह ईंट पत्थर के मकान बना कर रहने लगा। उसे कृषि की जानकारी प्राप्त हुई। वह भूमि पर खेती करने लगा। इस प्रकार मनुष्य अनाज उत्पादक बन गया। शरीर को ढकने के लिये उसने कपड़े बनाने आरम्भ कर दिये। अब तक मनुष्य ने बहुत कुछ खोज लिया था। अपनी इस खोज को उसने एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचाने का प्रयास किया जिससे भाषा का अविष्कार हुआ। धीरे धीरे संस्कृति का निर्माण हुआ। आज मानव जिस उन्नति तक पहुँचा है वह उसके पूर्वजों के कठिन एवं कठोर परिश्रम तथा लगन का परिणाम है। मानव एवं समाज दोनों एक दूसरे पर निर्भर करते है तथा एक दूसरे के पूरक हैं। सामाजिक अध्ययन से अभिप्रायः ऐसे विषय से है जो मानवीय सम्बन्धों की जानकारी प्रदान करता है। सामाजिक अध्ययन का जन्म अमेरिका में हुआ जिसमें भूगोल, इतिहास, राजनीति शास्त्रा तथा अर्थशास्त्रा का समावेश था। 1911 में कमेटी ऑफ टेन ने इसे समाज शास्त्रा से जोड़कर सामाजिक अध्ययन बना दिया। धीरे धीरे यह विषय इंगलैंड तथा यूरोप के अन्य देशों में भी पूर्ण रूप से विकसित हो गया।

सामाजिक अध्ययन का अर्थ

सामाजिक अध्ययन का शाब्दिक अर्थ हैं – "मानवीय परिप्रेक्ष्य में समाज का अध्ययन।" यह एक ऐसा विषय है जिसमें मानवीय सम्बन्धों तथा समाज के विभिन्न दृष्टिकोणों की जानकारी प्राप्त होती है। समाज में अनेक प्रकार के लोग रहते हैं जो अनेक क्रियाएं करते हैं। वह व्यवहार में भी भिन्न–भिन्न होते हैं। सामाजिक अध्ययन में हम ऐसे मनुष्यों की अनेक क्रियाओं का अध्ययन करते है। मनुष्य अपने आसपास के वातावरण के साथ सामजंस्य स्थापित करता है इसलिये मनुष्य तथा उसके वातावरण या पर्यावरण के सम्बन्धों का भी अध्ययन इसमें किया जाता हैं। सामाजिक अध्ययन में उन सभी विषयों का समावेश हैं जो मानव की सामाजिक कुशलता को विकसित करने में मदद करते हैं इसमें इतिहास, भूगोल, नागरिक शास्त्रा, राजनीति शास्त्रा, अर्थशास्त्रा और समाज शास्त्रा की विषय वस्तु है। मानव समाज ने आवश्यकतानुसार विज्ञान तथा तकनीकी की सहायता से समाज को सुख–सुविधाओं से परिपूर्ण किया। मानव जीवन के विकास पथ की कहानी या वह सामग्री जो बच्चो की सहायता के विकास पथ की कहानी या वह सामग्री जो बच्चो के सामाजिक विकास के लिये उपयोगी व आवश्यक हैं

सामाजिक अध्ययन की विषय वस्तु हैं। समय के साथ–साथ विज्ञान तकनीकी के विकास से जहाँ मानव ने ऐश आराम की वस्तुऐं प्राप्त की वही उसे कई समस्याओं का भी सामना करना पड़ा। इन समस्याओं को विभिन्न दृष्टिकोणों से समझने और इनके उचित समाधान के लिये सहयोग देने का प्रशिक्षण व्यक्ति को बचपन से ही प्राप्त होना चाहिए तभी वह समाज का उपयोगी सदस्य, सिद्ध हो सकता है। यही कारण हैं कि स्कूल विषयों में सामाजिक अध्ययन को सम्मिलित किया गया है। सामाजिक अध्ययन की धारणा को स्पष्ट करने के लिये कई विद्वानों ने इसकी परिभाषा देने का प्रयास किया हैं।

समाज तथा व्यक्ति का चोली दामन का साथ है। प्राचीन काल में बच्चों को घर–परिवार में विभिन्न क्रियाओं द्वारा मानव तथा मानव के मध्य पारस्परिक सम्बन्धों का ज्ञान प्राप्त हो जाता था जिससे उन्हें समाज तथा समुदाय की भी जानकारी प्राप्त हो जाती थी। वह अपने वातावरण से सामंजस्य स्थापित करता था और समाज की आवश्यक जानकारी उसे अपने आस पास प्राप्त हो जाती थी। समाज में परिवर्तन आया, विज्ञान तथा तकनीकी ने उन्नति की, मानव सभ्यता का विकास हुआ, समाज में जटिलताओं का बोलबाला होने लगा। विभिन्न सम्बन्धों की जानकारी जो बालक को घर परिवार या दैनिक क्रिया कलापों से संयुक्त परिवार में प्राप्त होती थी, का आभाव हो गया। यह सारा ज्ञान आज स्कूल को देना पड़ता है। ऐसा करने के लिये स्कूल को ऐसी सामग्री का चयन करना पड़ेगा जो ऐसे कार्यक्रम का निमार्ण करे जिससे बच्चा अतीत की परम्पराओं का ज्ञान प्राप्त कर ले, वर्तमान काल में उस ज्ञान का उपयोग कर सके तथा अपनी दैनिक जीवन की समस्याओं को निपटाने के योग्य बन सके। यही कारण है कि आज ;3त्द्ध तीन आर की शिक्षा की अपेक्षा ;4भ्द्ध चार ऐच की शिक्षा को महत्त्व दिया जाता हैं जो समाज की जटिलता और व्यक्ति के सम्बन्धों के स्पष्टीकरण के लिये आवश्यक हैं। यही कारण है कि शिक्षा शास्त्रियों ने सामाजिक अध्ययन की शिक्षा को आवश्यक ही नही अनिवार्य भी माना है। सामाजिक अध्ययन का जन्म एक स्वतन्त्रा – क्षेत्रा के रूप हुआ क्योंकि आज के बालक को भूतकाल की अपेक्षा अपने सामाजिक वातावरण तथा सम्बन्धों की अधिक जानकारी की आवश्यकता है। यह जानकारी उन्हें इतिहास, भूगोल, नागरिकशास्त्रा, अर्थशास्त्रा, व समाज शास्त्रा आदि भिन्न–भिन्न विषयों द्वारा नही जा सकती। इतना ही नही विज्ञान एवं तकनीकी के विकास ने भी मानव समाज में महान् परिवर्तन ला दिये है इन परिवर्तनों के परिणामस्वरूप मानवीय समाज तथा मानवीय सम्बन्धों में भी जटिलता आ गई है जिसे जानना व समझना आवश्यक है। आज संसार सिमट कर छोटा हो गया हैं, विश्व शान्ति आवश्यक हैं। ऐसे समय में सामाजिक अध्ययन एक अनिवार्य विषय के रूप में शिक्षा का अभिन्न अंग बन गया हैं। डा0 राधाकृष्णन् ने कहा हैं कि हम भूतकाल को याद रखें, वर्तमान के प्रति सजग रहें तथा हृदय में साहस तथा आत्मविश्वास के साथ भविष्य का निर्माण करे।" सामाजिक अध्ययन की आवश्यकता मनोवैज्ञानिक, सामाजिक तथा शैक्षिक दृष्टिकोण से भी हैं। इसके लिये हम निम्नलिखित अनेक तर्क दे सकते हैं। शैक्षिक कारणों में हम अपने उन उद्देश्यों को लेते हैं जिसके लिए हम शिक्षा ग्रहण करते हैं! वैसे तो समाज की अलग–अलग विचारधाराओं के अलग–अलग विचार हैं। माता–पिता का दृष्टिकोण यह है कि बच्चों की शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो उसके जीवन निर्वाह में सहायक हो! उनके दृष्टिकोण से शिक्षा का व्यावसायिक महत्व ज्यादा हैं। कुछ अन्य शिक्षा के सांस्कृतिक महत्व पर ज्यादा बल देते हैं। उनके अनुसार शिक्षा द्वारा मनुष्य की सभी

शक्तियों का पूर्ण विकास होना चाहिये। परन्तु इससे मनुष्य का पूर्ण सामाजिक विकास नहीं हो पाता। आज का वातावरण ऐसा भी नहीं है कि युवक–युवतियों को उनके माता–पिता व समाज पर ही छोड़ दिया जाए तो उन्हें अपनी व समाज की सभी समस्याओं की आवश्यक जानकारी भी हो जाए और यह मुमकिन नही कि समाज की अवहेलना करके हम अपने राष्ट्र का निर्माण कर सकते हैं। हमारा प्रजातांत्रिाक ढांचा कुछ ऐसा हैं कि राजनैतिक, सामाजिक व आर्थिक समस्याएं इतनी जटिल हैं जिनके बारे में हमारी जानकारी अतिआवश्यक हैं। यह हमारी सामाजिक शिक्षा के लिए अति आवश्यक हो जाता हैं कि बालक अपनी भौतिक व सामाजिक वातावरण को जाने व उसमें अपना समावेश कर सकें। सामाजिक जीवन व अच्छी नागरिकता के लिए यह आवश्यक हैं कि शिक्षा उनमें सत्य, ईमानदारी, सहनशीलता, व सहयोग के गुणों का विकास करें। नई–नई आवश्यकताओं के मध्य नजर पाठन सामग्री व पाठन विधियों में परिवर्तन किया जाना चाहिये। आधुनिक पाठन विधियों में, तारंबेतार, दृब्य–श्रव्य साधन, चलचित्रा, योजना विधि व क्रियाविधि का उपयोग उल्लेखनीय है। इन सभी आधुनिक विधियों के लिए एक सम्पूर्ण पाठ्यक्रम का होना अति आवश्यक है। सामाजिक अध्ययन आज के विकासशील विश्व के साथ विकासशील बच्चों के सम्बन्धों के समन्वय का आधार है। इसलिए सामाजिक अध्ययन मनुष्य की शिक्षा का मुख्य आधार हैं। आधुनिकीकरण की व्याख्या समाजशास्त्रियों, अर्थशास्त्रियों, मनोवैज्ञानिकों और इतिहासकारों आदि ने अपने–अपने दृष्टिकोण से की है। समाजशास्त्रियों के अनुसार आधुनिकीकरण विभेदीकरण की एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा हम एक समाज को दूसरे समाज से अलग करके देख सकते हैं। अर्थशास्त्रियों के अनुसार आधुनिकीकरण एक ऐसी प्रक्रिया है जिससे व्यक्ति नवीन वैज्ञानिक ढंगों का प्रयोग करते हुए उपलब्ध प्राकृतिक संसाधनों का इस प्रकार उपयोग करता है जिससे वह उनका अधिकतम लाभ उठाते हुए राष्ट्र का आर्थिक विकास कर सके। मनोवैज्ञानिकों का कहना है कि व्यक्ति में कुछ नया सीखने, कुछ नया करने और नये परिवर्तनों को ग्रहण करने की इच्छा और कर्मशीलता आधुनिकीकरण की प्रक्रिया है। इतिहासकारों की दृष्टि से आधुनिकीकरण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति अतीत की समीक्षा करके उसके आधार पर नवीन ज्ञान–विज्ञान का प्रयोग करते हुए अपने वर्तमान व भविष्य को बेहतर बनाने का प्रयास करता है। अतीत की अच्छाईयों और प्रासंगिक बातों को ग्रहण करता है, अप्रासंगिक बातों को छोड़ देता है। रहन–सहन व कार्य के नये–नये तरीके अपनाता है जिससे आधुनिकीकरण होता है। इस प्रकार विभिन्न विद्वानों ने अपने–अपने दृष्टिकोण से आधुनिकीकरण की व्याख्या की है। वस्तुतः आधुनिकीकरण पश्चिमीकरण नहीं है। आधुनिकीकरण किसी देश की भौतिक संस्कृति में परिवर्तन होना ही नहीं है अपितु उस देश के बिस्वा, प्रथा, मूल्य तथा सर्वांग जीवन में परिवर्तन होना है। आधुनिकीकरण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा सामाजिक ढाँचों में वांछित परिवर्तन लाया जा सकता है। आधुनिकीकरण को भी विद्वानों ने परिभाषित किया है। आधुनिकीकरण का अत्यन्त सरल व संक्षिप्त अर्थ है, वह प्रयास करना या ऐसा प्रभाव डालना जिससे की एक व्यक्ति, संस्था, समुदाय या समाज आधुनिक या नये समझे जाने वाले मूल्यों, विचारों, दृष्टिकोणों, संरचनाओं व संगठनों को अपनाने का प्रयास करे। समाज के व्यक्ति शिक्षित नहीं होंगे, तब तक समाज में वांछित परिवर्तन लाना सम्भव नहीं है। अनेक अध्ययनों एवं सर्वेक्षणों से यह स्पष्ट होता है कि विकसित समाजों की विशेषता उनकी शिक्षा, उच्च स्तरीय तकनीकी का प्रयोग एवं वैज्ञानिकता का विकास है। शिक्षा की प्रक्रिया समाज में उद्देश्यपूर्ण ढंग से चलती रहती है प्रत्येक समाज अपनी इच्छाओं और आवश्यकताओं की पूर्ति

शिक्षा द्वारा ही करता है। वह अपने सदस्यों के लिए शिक्षा का स्वरूप निर्धारित करते है। समाज के बदलने पर शिक्षा का स्वरूप भी बदलता रहता है। यह चक्र कभी नहीं रूकता सदैव गतिमान रहता है। शिक्षा अपनी विविध भूमिकाओं द्वारा समाज में आधुनिकीकरण लाने का प्रयास करती है।

शिक्षा नवीन विचारों एवं धारणाओं के प्रचार एवं प्रसार का एक महत्वपूर्ण साधन है। यह लोगों को परिवर्तन ग्रहण करने के लिए मानसिक रूप से तैयार करती है तथा ऐसे वातावरण का सृजन करती है जिससे लोग वांछित परिवर्तनों को सरलतापूर्वक गहण करें। शिक्षा द्वारा ही समाज में लोग नये–नये विचारों, धारणाओं, कृषि एवं उत्पादन की नयी विधियाँ, रहन–सहन के नये तरीकों को आसानी से स्वीकार कर लेते हैं। शिक्षा आधुनिकीकरण के महत्व को स्पष्ट करके उनका प्रसार करके, उनमें उपस्थित बाधक कारकों को दूर करके परिवर्तन ग्रहण कराने में सहायता देती है। यही कारण है कि शिक्षित वर्ग परिवर्तनों को पहले अपनाता है और अशिक्षित वर्ग बाद में।

समाज की अनेक आवश्यकतायें होती है। इन आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए शिक्षा भी आधुनिकीकरण से प्रभावित होती है। उदाहरणस्वरूप प्राचीन भारत में शिक्षा धर्म प्रधान थी धीरे–धीरे शिक्षा में भौतिकवाद की प्रधानता बढ़ी। अतः वर्तमान समय में शिक्षा के उद्देश्य, पाठ्यक्रम, शिक्षण विधियाँ, विद्यालय आदि में तेजी से परिवर्तन दृष्टिगोचर होता है।

आधुनिकीकरण और शिक्षा

शिक्षा व सामाजिक आधुनिकीकरण में घनिष्ठ सम्बन्ध है। सामाजिक परिवर्तन के लिए शिक्षा अत्यन्त अनिवार्य है। जब तक समाज के व्यक्ति शिक्षित नहीं होंगे, तब तक समाज में वांछित परिवर्तन लाना सम्भव नहीं है। अनेक अध्ययनों एवं सर्वेक्षणों से यह स्पष्ट होता है कि विकसित समाजों की विशेषता उनकी शिक्षा, उच्च स्तरीय तकनीकी का प्रयोग एवं वैज्ञानिकता का विकास है। शिक्षा की प्रक्रिया समाज में उद्देश्यपूर्ण ढंग से चलती रहती है प्रत्येक समाज अपनी इच्छाओं और आवश्यकताओं की पूर्ति शिक्षा द्वारा ही करता है। वह अपने सदस्यों के लिए शिक्षा का स्वरूप निर्धारित करते है। समाज के बदलने पर शिक्षा का स्वरूप भी बदलता रहता है। यह चक्र कभी नहीं रूकता सदैव गतिमान रहता है। शिक्षा अपनी विविध भूमिकाओं द्वारा समाज में आधुनिकीकरण लाने का प्रयास करती है। शिक्षा नवीन विचारों एवं धारणाओं के प्रचार एवं प्रसार का एक महत्वपूर्ण साधन है। यह लोगों को परिवर्तन ग्रहण करने के लिए मानसिक रूप से तैयार करती है तथा ऐसे वातावरण का सृजन करती है जिससे लोग वांछित परिवर्तनों को सरलतापूर्वक गहण करें। शिक्षा द्वारा ही समाज में लोग नये–नये विचारों, धारणाओं, कृषि एवं उत्पादन की नयी विधियाँ, रहन–सहन के नये तरीकों को आसानी से स्वीकार कर लेते हैं। शिक्षा आधुनिकीकरण के महत्व को स्पष्ट करके उनका प्रसार करके, उनमें उपस्थित बाधक कारकों को दूर करके परिवर्तन ग्रहण कराने में सहायता देती है। यही कारण है कि शिक्षित वर्ग परिवर्तनों को पहले अपनाता है और अशिक्षित वर्ग बाद में। समाज की अनेक आवश्यकतायें होती है। इन आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए शिक्षा भी आधुनिकीकरण से प्रभावित होती है। उदाहरणस्वरूप प्राचीन भारत में शिक्षा धर्म प्रधान थी धीरे–धीरे शिक्षा में भौतिकवाद की प्रधानता बढ़ी। अतः वर्तमान समय में शिक्षा के उद्देश्य, पाठ्यक्रम, शिक्षण विधियाँ, विद्यालय आदि में तेजी से परिवर्तन दृष्टिगोचर होता है।

निष्कर्ष

हम कह सकते हैं कि आधुनिकीकरण परिवर्तन की प्रक्रिया है जब समाज आधुनिक होता है तो प्राचीन व्यवस्थाओं से उसका सम्बन्ध टूटता जाता है, परन्तु इसका यह तात्पर्य नहीं होता है कि परम्परावाद और आधुनिकीकरण के बीच एक दीवार है। आधुनिकीकरण एक क्रमिक, मंद गति वाली, निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है। आधुनिकीकरण का प्रमुख लक्षण विज्ञान तथा तकनीकी का विकास है। आधुनिकीकरण की यह अभिधारणा है कि विज्ञान तथा तकनीकी के प्रयोग से ही मानव कल्याण है। आधुनिकीकरण की इस अभिधारणा में शिक्षा अत्यधिक सहायक सिद्ध हुई है। शिक्षा आधुनिकीकरण के लिए दर्शायें एवं वातावरण तैयार करती है। यह सामाजिक परिवर्तन व आधुनिकीकरण की गति को तीव्र बनाती है। शिक्षा सामाजिक परिवर्तन व आधुनिकीकरण की सुरक्षा करती है तथा सामाजिक परिवर्तन व आधुनिकीकरण के दुष्प्रभावों को रोकती है। शिक्षा समाज का महत्वपूर्ण अंग हैं तथा समय समय पर इसका मूल्यांकन अति आवश्यक है। मूल्यांकन केवल शिक्षा के क्षेत्रा में ही नहीं बल्कि जीवन के प्रत्येक क्षेत्रा में इसका अपना स्थान है। मूल्यांकन के द्वारा हम भावी जीवन की रूपरेखा बनाते हैं। मूल्यांकन से केवल निर्देशन ही प्राप्त नहीं होता अपितु विद्यार्थी के जीवन को उन्नत बनाने के लिये साधनों की भी जानकारी देता है। मूल्यांकन जीवन भर चलने वाली प्रक्रिया है तथा मूल्यांकन के द्वारा ही हम विषयों व व्यवावसायिक क्षेत्र का चुनाव करते हैं। शैक्षिक निष्पत्तियों की परीक्षा के लिए जिन प्रविधियों का प्रयोग किया जाता हैं वे इस प्रकार हैं – मौखिक, लिखित, प्रयोंगात्मक परीक्षाएं, चेकलिस्ट, रेटिंग स्केल, संचयी अभिलेख, रूचि मापनी आदि। मौखिक परीक्षाओं का उद्देश्य बालको ंकी अभिव्यक्ति, क्रियाशीलता, उच्चारण योग्यता आदि ज्ञात करना होता है। इन परीक्षाओं का उपयोग छोटी कक्षाओं में विद्यार्थियों से ऐसे प्रश्न पूछें जाते हैं जिनके उत्तर इतने लम्बे होते हैं कि परीक्षक विद्यार्थी के विचार, तुलना, अभिव्यजंना, तर्क, आलोचना शक्ति के साथ साथ भाषा एवं शैली की जाँच कर सकता है। निबन्धात्मक परीक्षाओं मे विश्वसनीयता, वैधता, व्यापकता, विभेदकारिता एवं वस्तुनिष्ठता का अभाव होता है। ये परीक्षाएं रटने की प्रवृत्ति को बढ़ावा देती है। इन परीक्षाओं के दोषों को दूर करने के लिए विभिन्न सुझाव दिये गए हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1 शुक्ला, सी0एम0: शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार, अनुभव पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 2013

2 रुहेला, एस0पी0: भारतीय शिक्षा का समाजशास्त्र, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 2012

3 मिश्रा, ऊषाः शिक्षा का समाजशास्त्र, न्यू कैलाश प्रकाशन, इलाहाबाद, 2012

4 विद्या भूषण एवं सचदेव, डी0आर0 : समाजशास्त्र के सिद्धान्त, किताब महल, इलाहाबाद, 2005

5 पणिक्कर, के0एन0: ''शिक्षा, आधुनिकीकरण और विकास'' परिप्रेक्ष्य राष्ट्रीय शैक्षिक योजना एवं प्रशासन विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, वर्ष 18, अंक 3, दिसम्बर 2011

6 गुप्ता, रमेश चन्द तथा भट्ट, चन्द्रशेखर, "शिक्षा में मापन और मूल्यांकन", लक्ष्मीनारायण अग्रवाल प्रकाशक, आगरा, 1968

7 पाण्डेय, कामता प्रसाद, "शिक्षा में मूल्याकंन" मीनाक्षी प्रकाशन, मेरठ, 1968